ISSN 2319-9407
www.yuvasamvad.org
www.yuvasamvad.com

नव निर्माण के लिए

युवा संवाद

जनवरी 2022 अंक-227 मूल्य - 30 रुपये

संविधान की रक्षा कौन करेगा?

किसान आन्दोलन : बात अभी बाकी है !

युवा संवाद

वर्षः 18 ■ अंकः 10 ■ जनवरी, 2022

प्रकाशन एवं संपादन पूर्णतया अवैतनिक

संपादक मंडल

प्रो. कमल नयन काबरा

अरुण कुमार त्रिपाठी

अनिल चमड़िया

योगेन्द्र

अशोक भारत

संपादक

ए. के. अरुण

कला संपादक

संजीव शाश्वती

संपादकीय एवं प्रबंध कार्यालय

167ए / जी.एच.2

पश्चिम विहार, नई दिल्ली–110063

फोन – 7303608800

ईमेल : ysamvad@gmail.com

यह प्रति	: 30 रु.	
सदस्यता की दरें		
वार्षिक	: 300	रु. (व्यक्तिगत)
	: 360	रु. (संस्थागत)
पांच वर्ष	: 1200	रु.
दस वर्ष	: 2000	रु.
आजीवन	: 3000	रु.
विदेशों में	: 200	यूएस डॉलर (पांच साल के लिए)

पत्रिका के लिये सहयोग राशि 'युवा संवाद' के नाम बैंक ड्राफ्ट/चैक से युवा संवाद 167ए/जी.एच.–2, पश्चिम विहार, नई दिल्ली–110063 को भेजें। दिल्ली से बाहर के चैक के साथ 50 रु. और जोड़ें। सदस्यता राशि सीधे युवा संवाद के अकाउंट संख्या 028805003109 आई.सी.आई.सी.आई., नई दिल्ली के खाते में भी सीधे जमा कराई जा सकती है। बैंक का IFSC CODE ICIC0000288 है। राशि जमा कराने के बाद अपना नाम व पूरा पता डाक पिनकोड सहित मोबाइल नं. 09868809602 पर अवश्य एस.एम.एस. करें।

मुद्रक, प्रकाशक और स्वामी डॉ. ए. के. अरुण, द्वारा मर्करी प्रिंटर्स, 602, गली जूते वाली, चूड़ीवालान, दिल्ली–06 से मुद्रित एवं उन्हीं के द्वारा 167ए/जी.एच. 2, पश्चिम विहार, नई दिल्ली–110063 से प्रकाशित।

संपादक – ए. के. अरुण

RNI NO. : DELHIN/2003 / 9929

पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। इससे सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

युवा संवाद से सम्बन्धित किसी भी विवाद का निपटारा दिल्ली की सक्षम अदालत में ही सम्भव होगा।

इस अंक में

यह जो बिहार है	: तालिबानी होता समाज	डॉ. योगेन्द्र	7
अपना देश	: संविधान की रक्षा कौन करेगा?	अरुण कुमार त्रिपाठी	8
पितृसत्ता	: बराबरी के विरोध में मर्दानगी	सुरेश तोमर	11
डाटा माइनिंग	: बिना आँकड़ों के क्या हिसाब ...	सनी तोमर	13
पण्डोरा पेपर्स	: पूँजीवादी भ्रष्टाचार की बुनियाद...	युवा संवाद ब्यूरो	15
पण्डोरा पेपर्स	: पण्डोरा पेपर्स क्या हैं?	राजेश कुमार	18
आबादी	: जनसंख्या नियंत्रण विधेयक ...	वंदना प्रसाद, दीपा सिन्हा	21
एमएसपी	: कानून की कठिनाइयाँ	प्रमोद भार्गव	23
किसान आंदोलन	: बात अभी बाकी है...!	देविन्दर शर्मा	25
अफीम/आतंक	: एशिया में अफीम की खेती	शैलेन्द्र चौहान	27
नर्मदा आंदोलन	: सवालों के साथ 'सरदार सरोवर'...	सदफ खान	29
अन्तर्राष्ट्रीय	: सऊदी अरब की साम्राज्यवादी...	यानिस इकबाल	31
अफगानिस्तान युद्ध	: अमरीका की हार के मायने	विक्रम प्रताप	35
अफगानिस्तान	: साम्राज्यवादी तबाही की मिसाल	प्रवीण कुमार	39
शोध आलेख	: महिलाओं के शारीरिक एवं मानसिक...	डॉ. आरती कुमारी	44
बेबाक	: सब चल रहा है, पर संसद नहीं...	सहीराम	49

स्थाई स्तंभ

पाठक संवाद :	4–5
संपादकीय :	6

वेब : www.yuvasamvad.org www.yuvasamvad.com

और कितना विष पीएंगे बाबा विश्वनाथ

हर समय राष्ट्रवाद की रट लगाने वाले राजनेताओं से समक्ष आजादी के अमृत महोत्सव के मौके पर यह विचार रखा जाना चाहिए कि आखिर हमारे स्वाधीनता सेनानियों ने मिथकों और इतिहास पुरुषों की कौन सी व्याख्या प्रस्तुत की थी और उसमें से किससे हमें क्या प्रेरणाएं लेनी चाहिए। वाराणसी में पहुंच कर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को अचानक राजा हरिश्चंद्र की सत्यनिष्ठा याद आ जाती है। जबकि योगी आदित्यनाथ को महात्मा गांधी की वह टिप्पणी याद आती है जिसमें वे काशी की गंदगी से विचलित हैं। निश्चित तौर पर गांधी काशी और विश्वनाथ मंदिर के आसपास की गंदगी से विचलित थे लेकिन उससे ज्यादा वे विचलित थे वहां की ठगी, दिखावे और लालच से। इसीलिए वे सुझाव भी देते हैं कि काशी विश्वनाथ मंदिर के आसपास शांत, निर्मल, सुगंधित और स्वच्छ वातावरणकृ बाह्य और आंतरिककृउत्पन्न करना प्रबंधकों का कर्तव्य होना चाहिए। वहां के पुजारियों और पंडों का लालची और धृष्टता भरा व्यवहार गांधी जी को खला था। जब उन्होंने पाई चढ़ाई और पंडा ने पाई फेंक दी और दो चार गालियां देकर बोले– तूं यों अपमान करेगा तो नरक में पड़ेगा।''

लेकिन गांधी ने काशी और राम से जो प्रेरणा ली थी वह अपने आंतरिक वातावरण को स्वच्छ करने की। जिसमें न तो शब्दों का आडंबर होता था और न ही रंगों का उपद्रव। वे राम का नाम तो जपते थे लेकिन राम नाम की किंवदंती उनके लिए सत्य को पाने और साधने का सहारा थी। इसीलिए राम नाम के साथ ही उन्होंने उनके पुरखे सत्यवादी हरिश्चंद्र को अपने जीवन में उतार लिया था। गांधी ने अपने बचपन में सत्य हरिश्चंद्र नाटक देखा था और कहा था कि उन्होंने सत्य के लिए कितने कष्ट सहे। भला लोग उतना कष्ट क्यों नहीं सहते। उन्होंने बचपन में वह नाटक अपने मन में खेला था और बड़े होने पर जीवन में वास्तविक रूप में खेलते रहे। शायद जीवन के अंत तक खेलते रहे। यही थी राजनीति की नैतिकता जिसे उन्होंने स्वाधीनता संग्राम को दिया। जिसे हम आजाद भारत में कायम नहीं रख पाए। सवाल उठता है कि काशी की बाह्य गंदगी को साफ करने का दावा करने वाले क्या आंतरिक गंदगी को भी साफ करने का साहस रखते हैं?

गांधी के विपरीत विचार रखने वाले लेकिन उन्हीं की तरह राजनीतिक नैतिकता के आग्रही डा भीमराव आंबेडकर का मानना था कि सनातन धर्म यानी हिंदू धर्म के ग्रंथ पवित्र नहीं हैं। बल्कि समाज की सारी गंदगी और भेदभाव तो उनके पाठ में ही भरा हुआ है। इसीलिए हिंदू समाज भी वैसा ही निर्मित हुआ है। इसलिए जब तक उन ग्रंथों और देवी देवताओं को त्यागा नहीं जाएगा तब तक भारतीय समाज नैतिक रूप से उन्नत नहीं होने वाला है। नैतिकता के लिए उन्होंने समाज को बौद्ध धर्म की ओर ले जाने की बात कही तो राजनीतिक व्यवस्था के लिए संविधान दिया। उनके नजरिए से देखें तो काशी से थोड़ी ही दूर पर वह सारनाथ है जहां पर भारतीय समाज की मुक्ति का वास्तविक मार्ग है। डा आंबेडकर ने भी जाति व्यवस्था के गरल को पीने और पचाने की कोशिश की थी। इसीलिए उन्हें बहुत किस्म की आलोचना और अपमान का सामना करना पड़ा और तनाव के इन्हीं कारणों से जल्दी चले भी गए।

लेकिन मिथकों और किंवदंतियों के नवीन व्याख्याकार डा राम मनोहर लोहिया तो शिव की किंवदंती को अलग की तरीके से प्रस्तुत करते हैं। उनका कहना था कि यह किंवदंतियां निश्चित तौर पर अशिक्षित व्यक्ति को सुसंस्कृत करती हैं लेकिन उनमें सड़ा देने की भी क्षमता होती है। उनके लिहाज से शिव की किंवदंती जहां असीमित व्यक्तित्व की कथा है वहीं वह प्रेम की अद्भुत कथा है। वह कथा पार्वती के प्रति शिव के समर्पण को प्रकट करती है और वे पार्वती के शरीर और फिर उससे गिरते अंगों को जिस तरह से लेकर पूरे भारतीय उपमहाद्वीप में घूम रहे हैं उससे हिंदुस्तानी समाज की एकता भी कायम होती दिखती है। लेकिन शिव की कथा में जो सबसे प्रासंगिक राजनीतिक विषय है वह है विषपान का। शिव देवासुर संग्राम में हिस्सा नहीं ले रहे थे। वे उससे अलग थे। लेकिन जब उस संग्राम के परिणामस्वरूप समुद्र मंथन हुआ तो पहले कालकूट विष निकला और उससे हाहाकार मच गया। तब शिव ने उसे पी लिया और शरीर के भीतर ले जाने की बजाय गले पर ही रोक लिया। इसीलिए वे नीलकंठ कहलाए।

बाबा विश्वनाथ यानी भगवान शिव के जीवन का यही प्रसंग आज के लिए विचारणीय है। वह विष है इस उपमहाद्वीप में बढ़ती सांप्रदायिकता और धार्मिक कट्टरता का। जिसमें जरा भी विवेक है वह समझ सकता है कि सांप्रदायिकता और धार्मिक कट्टरता से आप न तो आध्यात्मिक आत्मा में प्रवेश कर

शेष पृष्ठ 50 पर